ब्रिटिश नीति का भारत पर प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन

हुकमाराम रेंगर

सहायक आचार्य, इतिहास
राजकीय महाविद्यालय, कैलाषनगर,
सिरोही

सारांशः अंग्रेजी शासन के दौरान भारत एक उपनिवेश बन गया। यह ब्रिटेन में तैयार माल के लिए एक बड़ी मंडी थी, अनाज और कच्चे माल का बड़ा श्रोता था और ब्रिटिश पूँजी लगाने का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र था। शाही हितों की रक्षा के लिए खेती पर अधिक कर लगाया जाता था। देश की अधिकतर परिवहन व्यवस्था, वर्तमान खाने और उद्योग, विदेशी व्यापार तटीय और अन्तर्राष्ट्रीय जहाजरानी और बैंक व इन्श्योरेन्स कम्पनियाँ सभी विदेशी अधिकार में थी। सर्वोपरी भारत की आर्थिक और सामाजिक उन्नति पूर्णतया अंग्रेजों के अधीन थी। इसके फलस्वरूप भारत दिन–प्रतिदिन निर्धन होने लगा तथा भारतीयों के उद्योग धंधे नष्ट होने लगे। इस प्रकार अंग्रेजों ने भारतीयों के व्यापार पर अपना नियंत्रण स्थापित कर भारतीयों का आर्थिक शोषण किया। मानव सभ्यता की प्रगति के साथ–साथ उनके आर्थिक विचारों का भी विकास हुआ। ब्रितानियों ने भारत में लूट–मार करके धन प्राप्त किया तथा उसे इंग्लैण्ड भेज दिया। ब्रितानियों ने भारत से कच्चा माल इंग्लैण्ड भेजा तथा वहाँ से मशीनों द्वारा माल तैयार होकर भारत आने लगा।

प्रस्तावनाः–

रजनी पादत्त ने लिखा है– 'ब्रिटेन द्वारा भारतीय उद्योगों के सर्वनाश करने के परिणामों का अर्थव्यवस्था पर सहज में ही अनुमान लगाया जा सकता है। इग्लैण्ड में पुराने हथकरघा उद्योगों का नाश हुआ, उसके स्थान पर मशीन उद्योग स्थापित हो गये, परन्तु भारत में लाखों कारीगरों तथा शिल्पियों की तबाही, बर्बादी के स्थान पर नये वैकल्पिक उद्योग स्थापित हीं किये गये। पुराने घनी आबादी और कपड़ा वाले नगर जैसे ढाका और मुर्शिबाद, सूरत तथा अन्य इस प्रकार के नगर कुछ ही वर्षों में ब्रिटेन के शोषण के नीति के फलसवरूप ऐसे पूर्णरूप से उक्षड़ गये जैसा कि कोई विनाश्कारी युद्ध अथवा किदेशी वियज की लूट–पाट भी नहीं कर सकती थी। सर चार्ल्स ट्रिविलयन ने 1840 में संसदीय जाँच समिति के समाने कहा ढ़ाका की आबादी 1,50,000 से छटकार 30,000 या 40,000 हो गयी है और जुगल तथा मलेरिया शिघ्रता से नगर की छापे जा रहे है। ढ़ाका जो भारत का मानचेस्टर था, एक अत्यन्त समृद्ध नगर से गिरकर एक छोटा कस्बा रह गया है। वहाँ वास्तव में बड़ी भारी विपत्ति आयी है।

भारत की आर्थिक दुर्दशा का वर्णन करते हुए जॉर्ज थॉमसन ने लिखा है– भारत की दशा की ओर देखिए लोगों की परिस्थिति की तरफ देखिए जो कि अधिक से अधिक निर्धन बना दिये गये है। राजाओं के राज–घाट छीन लिए गये हैं। सामन्त या बड़े लिए गये है। सामन्त बड़े जमीन्दार अपतानित किये गये है। भूसवामी समाप्त कर दिये गये हैं। और गाँव बर्बाद हो गये हैं। भिखारीपन गुण्ड़ो के जत्थों द्वारा लूट–खशोट ओर विद्रोह प्रत्येक दिशा में बढ़ रहे है। यह कोई अतिश्योक्ति नहीं है। लोगों के काफी अन्न उत्पन्न करने बाबजूद भूख लड़पते लाखों लोग पर जाते है। इसका ज्वलंत प्रमाण बंगाल प्रेसिडन्सी के उत्तरी पश्चिमी प्रांतों में जहाँ 5 लाख लोगों की खोपड़ियाँ है, जो कुछ ही महिनों में भूख के कारण अकाल के दिनों में मर गए हैं।

डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनूसार ब्रिटिश जाज में पहले भारत का व्यापर तथा उद्योग धंधो का विनाश के फलस्वरूप अधिकांश लोगों को खेती पर आश्रित होना पडा। अगले 50 वर्षों से कृषकी भारत की आबादी का 4–5 भाग था, तबाही–बर्बादी के किनारे पर पहुँच गया। 90 प्रतिशत किसानों को दिन में दो बार पेट भरने के लिए रोटी भी नहीं मिलती थी, न ही उनके रहने के लिए अच्छा मकान तथा पहनने के लिए अच्छा कपड़ा था। इस तरह से भारत में पूर्ण सर्वव्यापी निर्धरता की नींव रख दी गई।

ब्रिटिश काऊन के अधीन भारत की आर्थिक नीति पूर्णतया इग्लैण्ड के हितों के अनुरूप था। जूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि ग्रेट ब्रिटेन अपने राजनीतिक नियंत्रण द्वारा भारत के आर्थिक भंडारों का पूर्ण रूप से शोषण किया। यह ठीक है कि परिवर्तित समय के अनुसार शोषित का ढंग भी परिवर्तित होता गया। धन का निकास जो कपंनी के अधीन वाणिक नियमों के आधार पर होता था। अब कुछ बदल गया। पूर्ण स्वतंत्र व्यापार अथवा थोडा–सा आयात कर लगाकर हमारे उभरते हुए

उद्योगों को हानि पहुँचाई गयी। भारत के विकास के बहाने अंग्रेजों ने इसका विकास राजनीतिक तथा वाणिज्यिक दृष्टि से किया।

अंग्रेजों की आर्थिक नीतियाँ भी भारतीय व्यापार और उद्योगों के विरूद्ध थी। ईस्ट इंडिया कम्पनी के राजनीतिक शक्ति के प्रयोग से भारतीय हस्तशिल्प और व्यापार का सर्वनाश हो गया था और इसे केवल अंग्रेजी शोषण प्रणाली के परिशिष्ट के रूप में जीवित रहने दिया गया। कार्ल मार्क्स ने जो एक बहुत चतुर प्रेक्षक थे, उन्होंने 1853 में लिख यह अंग्रेजी घुसपैठियों थी, जिसने भारतीय खड्डी को तोड दिया और चरखे को नाश कर दिया। अंग्रेजों ने भारतीय सूती कपड़े को अंग्रेजी मंडी से वंचित करना शुरू कर दिया फिर भारत में एक ऐसा मोड दिया कि सूती कपड़े की मातृभूमि को सूती कपड़े से भर दिया। इसका नाश होने से कृषि का बाझ बढ़ गया और अंत में देश अकिचन हो गया है। देश की संपदा और जनता के शोषण के लिए औपनिवेशिक शासन के लिए नए–नए रूप ओर विशेषताएँ उभरकर सामने आई। भारत में बिछाया जाने वाला रेल लाइनों का जाल पहली प्रयोगात्मक रेल लाईन 1849 में बिछा दिया गया ओर बाद में बंबई एवं पूर्ण (ठाणे) के बीच ऐतिहासिक रेल संचार 1854 में स्थापित हो चुकी थी लेकिन रेल निर्माण का कार्य 1859–1869 के बीच सम्पन्न हुआ इसका प्रमुख उद्देश्य यह था कि ब्रिटिश उद्योग के लिए चारों ओर से कच्चा माल जुटाया जाय तथा उत्पाद के लिए बाजार तैयार किया जाय। इसने देश की परिवहन व्यवस्था में कांतिकारी परिवर्तन ला दिया।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि पर आधारित इस समय की महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। भारत में ब्रिटिश नीति ने अर्थव्यवस्था के ग्रामीणीकरण को बढ़ावा दिया। जिसके परिणाम स्वरूप कृषि पर आधारित 80þ जनसंख्या जीवन–यापन कर रही थी। अंग्रेजो द्वारा भूराजस्व की वसूली के अलग–अलग प्रांतों में अलग–अलग रूप सामने आये।

कृषि के क्षेत्र में भू–राजस्व नीति ने बंगाल में स्थायी बन्दोबस्त के अन्तर्गत भूमि पर जमींदारों का अधिकार होता था, जिसके लिए वे स्थायी तौर पर निर्धारित भू–राजस्व अदा करते थे, वहीं उत्तरी भारत में भूमि पर जमींदारों अथवा ग्राम समुदायों का अधिकार होता था जो समय–समय पर संशोधित होते रहनेवाला भू–राजस्व अदा करते थे। बंबई तथा मद्रास प्रेसिडेन्सियों में रैयतवारी प्रथा के अन्तर्गत भूमि पर किसान का मालिकाना अधिकार होता था। किसान सीधे राज्य को ही भू–राजस्व या लगाने अदा करते थे। लगानों का निर्धारण हर रकबे के लिए अलग–अलग होता था और समय–समय पर इसमें संशोधन होते रहे थे। चूंकि भू–राजस्व सार्वजनिक आय का महत्त्वपूर्ण श्रोत था। अतः उसके निर्धारण की दरें ऊँची होती थी तथा सरकार लगातार अपनी माँग बढ़ाने की कोशिश में लगी रहती थी। रैयतवाडी क्षेत्र में निर्धारण का आधार कुल पैदावार का आधा भाग था। यह नीति कृषि में सुधार या किसान की दशा जैसी बातों की नजर अंदाज करती थी। कृर्षि सुधार ऋण या तकावी की सुविधा बस नाम भर के लिए ही अस्तित्व में आई। भू–राजस्व में कमी करने का प्रयास कभी नहीं किया जाता था।

भू–राजस्व की ऊँची दर का नतीजा था, किसान की गरीबी और सर्वानाश क्योंकि वह अपने खाने तथा भू–राजस्व के नगद भुगतान के लिए कर्ज लेने को अधिक से अधिक विवश होता जा रहा था। सिंचाई के किाव के लिए कोई प्रयास किया गया, जबकि एक मात्र इसके द्वारा ही कृषि को बाढ़ और अनावृष्टि की विनाश लीला से बचाया जा सकता था। संयुक्त प्रति तथा पंजाब के पश्चिमी इलाके ही इस मामले के एक मात्र अपवाद थे। वहाँ भी सिचाई का लाभ किसानों एक बहुत छोटे से हिस्से तथा जमींदारों को ही पहुँच। हिवटकोंकेको कथन है– रेगिस्तान को हरा भरा करना मुख्य लक्ष्य नहीं था। मुख्य लक्ष्य के यह था कि परम्परागत कृषि की पिछडी उत्पादकता को प्रोत्साहित कर उसकी सम्भासित समृद्धि का न्यूनतम अवधि में अधिकारि दौहन किया जा सके तथा जहाँ आवश्यकता हो, वहीं उददेश्य की पूर्ति के लिए विवेश किया जाए ताकि मुक्त हस्त से और शीघ्रता से घन बटोरा जा सके।

सन् 1765 से लेकर 1855 तक यहाँ बारह अकाल पड़े और चार बार खाद्यान्न का भीषण अभाव हो गया। इसका मुख्य कारण मानसूनी वर्षा का अभाव था। इस एक प्राकृतिक आपदा मानकर भूला जा सकता है। बार–बार अकाल पड़ने से मानव मृत्यु दर में वृद्धि हुई और साथ ही उसने पशु सम्पत्ति का भी काफी नुकसान पहुँचाया यों कि अकाल के दिनों में चारें की भारी कमी हो जाती थी। इन दिनों में लोग अपने घर–बार और देश छोड़कर विदेश चले जाते थे।

इसके अलावे व्यवसायीकरण के विस्तार ने भारतीय किसानों को कीमतों की घट बढ़ के अधीन बना दिया था। यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि एक और विचौलियों के कारण बढ़ी हुई किमतों का उन्हें कोई फायदा नहीं मिल पाता था, दूसरी और कीमतों के घटने का उन पर बहुत बुरा असर पडता था। यह तथ्य पहले कभी इतनी अधिक स्पष्टता के साथ उजागर नहीं हुआ था जितना 1920 के दशक के अंत में 'मंदी के दौरान। यह वह समय था जब ग्रामीण ऋणग्रस्तता की समस्या और अधिक विकराल रूप में सामने आई और इसके कारण भारी पैमाने पर जमीन हस्तांतरिक की गई ओर गिरबी रखी गयी। यद्यपि सरकार राहत देने की बात अवश्य की परन्तु वे अधिकांशतः नगण्य साबित हुए।

ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीति भारतीय जनता के लिए विनाशकारी साबित हुई। भारतीय जहाजों को रोक कर केवल ब्रिटिश जहाजों को व्यापार में प्रयोग करने के इस्ट इण्डिया कंपनी के कोर्ट ऑफ डाइरेयटर्स के फैसले से भारतीय जहाज रानी उद्योग पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ा। भारत में प्रयोग में लाने के लिए केवल ब्रिटेन में बने कागज को खरीदने की ब्रिटिश नीति से भारतीय कागज उद्योग पर आघात हुआ। कच्छ और सिन्ध में हथियारों और ढालों हथियार रखने और उनके प्रयोग करने की निषेधाज्ञा से इस उद्योग को नुकसान पहुँचा। भारत में लोहा गलाने के उद्योगों को भी नुकसान पहुँचा।

भारत में ग्रामीण उद्योग नष्ट हो गये और भारत एक–दुसरे का आर्थिक दृष्टि से अंग बन गया। बहुत से हस्तशिल्पकारों के आय के साधन समाप्त हो गये और ये भूखों मरने लगे। भारत में औद्योगिक उन्नति बहुत धीमी किसी, जिसको किसी भी प्रकार औद्योगिक कांति नहीं कहा जा सकता। सीमित उन्नति भी स्वतंत्र नही थी परन्तु विदेशी पूँजी के अधिकार में थी। भारी पूँजी के समान और रसायन उद्योगों के बिना शीघ्र और स्वावलम्बी औद्योगिक उन्नति नहीं हो सकती थीं। मशीनी औजार और इन्जीनियरिंग और धातु–शोधन संबंधी उद्योग बिल्कुल नही थे। देश में किसी प्रकार का शिल्प कला संबंधी अनुसंधान नहीं होता था। भारत में व्यापारिक परिवर्तन आया। इसका झुकाव भारतीय औद्योगिक पूँजीवाद की ओर न होकर एक निर्भर और अविकसित उपनिवेश की अर्थव्यवस्था की ओर था। सिंचाई और बिजली की सुविधाएँ कहीं ज्यादा और कहीं कम थी।

ब्रिटिश सरकार ने केवल ब्रिटिश हितों की रक्षा के व्यापार और उद्योग को अपने अधिकार में कर रखा था। विदेशी व्यापार से भारतीय जनता कोई चलाई नहीं होती थीं, क्योंकि विदेशी व्यापार की राशि केवल गृह प्रभार देने में लगा दी जाती थी, विदेशी व्यापार न स्वाभाविक था और न ही ठीक ढंग का था। भारत में ब्रिटेन में तैयार किया हुआ माल अधिक मात्रा में आ गया था और उसकों विदेशों के लिए आवश्यक कच्चे माल के उत्पादन और उसे बाहर भेजने के लिए मजबूर किया जाता था।

डॉ० ताराचंद का मत है कि शाही ब्रिटेन भारत के संज्ञ एक पिछलग्गू की तरह व्यवहार करता था जिसका मुख्य कार्य स्वामी के लिए परिश्रम करना उसकी अर्थव्यवस्था की उन्नत करना और साम्राज्य की शान और यश को बढाना था।'

19 वीं शताब्दी के मध्य अंतिम भाग में भारत की आर्थिक दशा के संबंध में विलियम डिग्वी ने अपनी पुस्तक प्रोसपिरियस ब्रिटिस, दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक पोवर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया और 'आर सी. दत्त ने अपनी पुस्तक इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया में किया है। भारत में 1800 और 1825 के बीच अकाल पड़ा और 1875 और 1900 के बीच 22 अकाल पड़ा। निरीक्षण के बाद डिग्वी हमदर्दी भरे दिल से लिखा– मैं नहीं कह सकता यदि मुझे कर्त्तव्य भरा ज्ञान है तो मैं ऐसा कहने से रूक जाता हूँ। उन्होंने ब्रिटिश दावें का उपहास उड़ाया कि ईश्वर की आज्ञा से भारत उनके पास धरोहर के रूप में रखा हुआ है जबकि भारत गरीब होता जा रहा था. अंग्रेजी अर्थव्यवस्था इतनी उन्नत हो गयी थी कि तैयार माल को बाहर भेजने के बाद भी उनके पास लगाने के लिए पूँजी बची हुई थी। भारत का धन इंगलैण्ड चला जाता था। प्रत्येक साल भारत इंग्लैण्ड को 16 लाख गृह प्रभार के रूप मे देता था, जिसमें कर्ज पर ब्याज, सिवलि शासन का खर्च सेना, स्टोर रेलवे आदि का खर्च शामिल होता था। यह अनुमान लगाया गया है कि 1895–96 में भारत ने इंग्लैण्ड को 50 करोड़ से अधिक भेजे। इसके अतिरिक्त सेना के खर्च इनाम, पेंशन और ग्रेचुटी जो हर साल देना पड़ता था।

दादा भाई नौरोजी ने भारतीय धन निर्गम के संबंध में अपनी पुस्तक पोबर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया में सुन्दर वर्णन किया है। उनका मत था कि दूसरे कारणों को छोड़कर भारतीय धन का निर्गम भारत की वास्तविक गरीबी और दुख का कारण था। उनका विचार था कि इससे दूसरों के स्वार्थ के लिए भारत में विदेशी पूँजी का निवेश हुआ। भारतीय धन निर्गम से विदेशी पूँजीपति देश में आये और उन्होंने बिना किसी स्वदेशी मुकाबले के भारत में पूँजी के एकत्र होने से रोका और भारत के भौतिक साधनों से सारे लाभ उठाकर उन पर उनका मतानुसार जनता की भीषण गरीबी और दयनीय अवस्था का मुख्य कारण विदेशियों को भारती शासन में असाधारण रूप से नौकरी देना, देश के भौतिक साधनों की हानि और धन निर्गम था। उन्होंने फिर कहा– यह जीवन और मृत्यु का सवाल है। इस बुराई का हटा दीजिए और भारत प्रत्येक दशा में समृद्ध हो जायेगा।

अंग्रेजी शासन में धन निर्गम सरकार की वर्तमान शासन प्रणाली का एक अंग था, जो प्रति वर्ष बढता जाता था। भारतीय धन का निर्गम एक बहते हुए फोड़े के समान था। पिछले शासकों ले कसाइयों की भांति बिना किसी नियम के कभी अंग और कभी वहाँ भारत को लूटा परंतु अंग्रेजों ने इंग्लैण्ड के कुशल यंत्रो द्वारा भारत की अर्थ व्यवस्था को जड़ से उखाड दिया।

भारतीय उद्योग पर पड़े विपरीत प्रभाव की अपेक्षा भारतीयों ने ब्रिटिश उद्योगों को दी गयी सुविधाओं का विरोध किया। ब्रिटिश पूँजीपतियों की सरकार चाहती थी। सारी कोयले और सोने की खानों. जूट और पटसन की मिले व चाय के बगीचों और नील की फैक्ट्रियों पर यूरोपियनों अधिकार था। कागज की मिलों, जूट, प्रेस, मिलों, लकडी की मिलों, कपास को निकालने और खानें, कारखानों आदि के यूरोपीय मालिक थे। मेकनीक ने 1900 ई० में हाउस ऑफ कामंस भाषण की कि 'भारत के समस्त आय के साधन ही इस देश को गिरवी रख दिये है। ब्रिटिश सूती माल के आयात पर से कर समाप्त कर दिया गया, यद्यपि इससे भारतीय राजकोष को प्रत्येक वर्ष करोड़ों रूपये की हानि होती थी। बाद में जब इंगलैंड में बने सूती माल पर 5 प्रतिशत कर लगाया गया तो इतना ही भारत में बने सूती माल पर ही लगाया गया। यह कहा गया भारत का शासन ब्रिटिश व्यापारियों के हितों की रक्षा करने के लिए। दादा भाई नौरोजी के अनुसार भारत और इंग्लैण्ड के बीच मुक्त व्यापार एक घोड़े पर चढ़े या शक्तिशाली मनुष्य और इंग्लैण्ड के बीच मुक्त व्यापार के बीच क्षेत्र के समान था। भारत पर लादी गयी मुक्त व्यापार की नीति एक तरफा थी। भारत को मुक्त व्यापार नीति से देश की उन्नति में बाधा पड़ी। 1891 में पंजाब निवासी लालामुरली जी ने कहा 'राष्ट्रों के बीच सबके के लिए बराबरी का मुक्त व्यापार एक धोखा है। मैं इससे घृणा करता हूँ। भारत और पूँजीवादी इंग्लैण्ड के बीच बराबरी का व्यापार कैसे हो सकता हैं। उन्होंने फिर

कहा, ये लैम्प येरोपीयनों द्वारा बनी कुर्सियों और चुस्त पोशाकें और हैट। अंग्रेजी कोट, बोनेट और फाक और चाँदी चढ़े हुए वेंत और आपके घरों में लगी सभी ऐश आराम की वस्तुएँ सभी भारत की भूखमरी और गरीबी की यादगारें हैं।

निष्कर्षः–

उपरोक्त संदर्भ के आधार पर कहा जा सकता है कि ब्रिटिश काउन के अधीन भारत की आर्थिक नीति पूर्णतः इंग्लैण्ड के हितों के अनुरूप था। दुसरे शब्दों में कह सकते है कि ग्रेट ब्रिटेन अपने राजीतिक नियंत्रण द्वारा भारत के आर्थिक भंडारों का पूर्ण रूप से शोषण किया। यह ठीक है कि परिवर्तित समय के अनुसार शोषण का ढंग भी परिवर्तित होता गया। भारत के विकास के बहाने अंग्रेजों ने इसका विकास राजनीतिक तथा वाणिज्यिक दृष्टि से किया। उसकी इस असह्य पीड़ा से आज तक भारत उबर नहीं सका है। यदि योही हाल रहा तो भारत ब्रिटिश शासकों की तरह राष्ट्रीय नेता पंच सितारा होटलों में मौज मस्ती लेते रहेंगे तथा सुख के लिए लोकतंत्र का मुखौटा लगाकर सारी दानवी कृत्य करते रहेंगे।

संदर्भ :–

- सोमेश चन्द्र द इकोनोमिक हिस्ट्र ऑफ इण्डिया इन विक्टोरियन एज, पब्लिकेशन डिविजन 1969
- वही.. 25
- कार्ल मार्क्स और केडरिक एंगेल पूवोक्त
- वही पृ०.....205
- दादा भाई जी नौरोजी, पोवर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया
- रजनीपामदत्त, इंडिया, मनीशा, 1970
- डेनियल एक एलिस लेण्ड एण्ड लेबर इंडियान पृ० 103
- वी.एम.मोथ्या, फेमिन्स इन इंडिया पृ० 19
- वहीं..